अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन I

कृतज्ञता V

अनुक्रमणिका VII

प्रथम अध्याय - रामदरश मिश्र : व्यक्ति और वाङ्मय 1 - 29

प्रास्ताविक

1.1 व्यक्ति-परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 बाल्यकाल

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 माता

1.1.5 पिता

1.1.6 भाई-बहन

1.1.7 विवाह

1.1.8 परिवार

1.1.9 गुरु

1.1.10 अध्यापन

1.1.11 व्यक्तित्व

1.2 डॉ. रामदरश मिश्र और उनका वाङ्मय

1.2.1 कविता-संग्रह

1.2.2 कहानी-संग्रह

1.2.3 उपन्यास

1.2.4 आलोचना

1.2.5 ललित निबंध-संग्रह

1.2.6 यात्रावर्णन

1.2.7 आत्मकथा

1.2.8 संस्मरण

1.2.9 डायरी

1.2.10 साक्षरोपयोगी साहित्य

1.2.11 पुरस्कार तथा सम्मान

1.2.12 सम्मानित कृतियाँ

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - रामदरश मिश्र के काव्य का परिचयात्मक विवेचन 30-83

प्रास्ताविक

2.1 रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ - सं. रघुवीर चौधरी

2.2 बाजार को निकले हैं लोग - रामदरश मिश्र

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - रामदरश मिश्र के काव्य में युगीन जीवन 84 - 108

प्रास्ताविक

3.1 युगीन जीवन से तात्पर्य

3.2 युगीन जीवन के विविध पक्ष

3.3 रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित युगीन जीवन

3.3.1 सामाजिक पक्ष

3.3.1.1 अधिकार के प्रति सजगता

3.3.1.2 व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना

3.3.1.3 गुलामी के प्रति विद्रोह

3.3.1.4 सामंती मानसिकता का विरोध

3.3.1.5 झूठी शान-शौकत

3.3.1.6 असंघटितता

3.3.1.7 प्रकृति चित्रण

3.3.1.8 मातृभूमि के प्रति प्रेम

3.3.1.9 कृषि जीवन

3.3.1.10 प्रेम-चित्रण

3.3.2 राजनीतिक पक्ष

3.3.2.1 चुनाव

3.3.2.2 स्वार्थी एवं भ्रष्ट राजनीतिज्ञ

3.3.2.3 राजनीति का विकृत चेहरा

3.3.2.4 साहित्यिक राजनीति

3.3.3 धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

3.3.3.1 धर्म के नये मानदंड

3.3.3.2 धार्मिकता प्रगति में बाधा

3.3.3.3 मानव धर्म

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

3.3.3.4 सांप्रदायिकता
3.3.3.5 नई सभ्यता और संस्कृति का उदय
3.3.3.6 पाश्चात्यों से प्रभावित संस्कृति
3.3.4 आर्थिक पक्ष
3.3.4.1 अर्थ केंद्रित जीवन
3.3.4.2 मजदूरों का यथार्थ जीवन
3.3.4.3 अवैध रास्ते से धन की प्राप्ति
3.3.4.4 मानवीय मूल्यों में बिखराव
3.3.4.5 रिश्ते-संबंधों में दरार
3.3.4.6 नौकरी की तलाश
3.3.4.7 देश स्वावलंबन की आस
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य काव्य में युग जीवन की समस्याएँ एवं समाधान 109-130

प्रास्ताविक
4.1 विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याएँ
4.1.1 भ्रष्टाचार की समस्या
4.1.2 शोषण की समस्या
4.1.3 भय की समस्या
4.1.4 बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या
4.1.5 शहरों में बढ़ती जनसंख्या की समस्या
4.1.6 व्यसनाधिनता की समस्या
4.1.7 असंघटितता तथा दिशाहीनता की समस्या
4.1.8 सुख के खोज की समस्या
4.1.9 रिश्तों में दरार की समस्या
4.1.10 लापरवाही की समस्या
4.1.11 कृत्रिम जीवन तथा घुटन की समस्या
4.1.12 राजनीतिक समस्या
4.1.12.1 राजकीय गुंडा-गर्दी तथा अमानवीय वृत्ति की समस्या
4.1.12.2 राजकीय दल बदलू वृत्ति की समस्या
4.1.12.3 चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या
4.1.13 खोखली देशभक्ति की समस्या

4.1.14 साहित्यिक क्षेत्र की समस्याएँ
4.1.15 न्याय और आम आदमी की समस्या
4.1.16 धार्मिक समस्या
4.1.17 किसान जीवन की समस्याएँ
4.1.18 पर्यावरण की समस्या
4.1.19 प्रेमी युगलों की समस्या

4.2 विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याओं का समाधान
निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य काव्य की कलात्मकता का विवेचन 131-156

प्रास्ताविक
5.1 रामदरश मिश्र के विविध गज़लों के अंग
5.2 भाषा
5.3 रस
5.4 अलंकार
5.5 प्रतीक योजना
5.6 बिंब योजना
निष्कर्ष

उपसंहार 157-163

परिशिष्ट 164

संदर्भ ग्रंथ-सूची 165-168

❑❑❑❑